KU Newsletter

May 2025/ Edition 2, Vol. 1, चैत्र मास, विक्रम संवत २०८२

www.kuk.ac.in

एनईपी – 2020 बी.एड. पाठ्यक्रम होंगे नये अवतार में

विकसित भारत 2047 : शिक्षा के नए स्वरूप पर कुवि में मन्थन– प्रो. सचदेवा

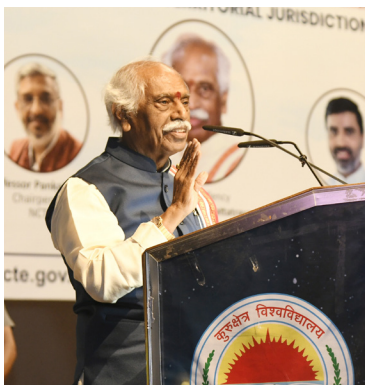

कुवि परिसर : विकसित भारत – 2047 के संकल्प का एक सेतु बनते हुए कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय ने गत 29 अप्रैल को दो–दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया। "शिक्षक शिक्षा में परिवर्तन – विकसित भारत 2047 की दिशा में" विषय पर आधारित इस सम्मेलन में देशभर के शिक्षा विशेषज्ञ, नीति–निर्माता और विभिन्न विश्वविद्यालयों के कुलपतियों की प्रतिभागिता रही। कुलपति प्रो. सोमनाथ सचदेवा ने सम्मेलन में उद्घाटन भाषण देते हुए कहा कि शिक्षक बनने की आ. कांक्षा रखने वाले छात्रों के लिए आई.टी. ई.पी. (एकीकृत शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम) एक क्रांतिकारी पहल है। अब 12वीं के बाद ही छात्र बी.ए.–बी.एड. एकीकृत रूप में कर सकेंगे, जिससे न केवल समय की बचत होगी, बल्कि उन्हें प्रशिक्षित व बहुआयामी शिक्षक बनने का अवसर भी मिलेगा। एनसीटीई के चेयरपर्सन प्रो. पंकज अरोड़ा ने घोषणा की कि जल्द ही एक वर्षीय बी.एड. कोर्स फिर से शुरू किया जाएगा। यह कोर्स उन छात्रों के लिए होगा जिन्होंने चार वर्षीय स्नातक या स्नातकोत्तर की पढ़ाई पूरी कर ली है। वहीं, तीन वर्षीय स्नातक करने वालों के लिए दो वर्षीय बी.एड. उपलब्ध रहेगा। इसके अतिरिक्त, एक वर्षीय नियमित एम. एड. और दो वर्षीय पार्ट टाइम एम.एड. को भी राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुरूप पुनः संरचित किया जा रहा है।

अब चार वर्षीय बी.ए. बी.एड (आईटीईपी), दो वर्षीय बी.एड व एक वर्षीय बी.एड डिग्री करने वाले छात्र एक वर्षीय रेगुलर एम.एड में दाखिला ले पाएंगे। दो वर्षीय पार्ट–टाइम एम.एड केवल वे ही छात्र कर पाएंगे जो कि देशभर के अलग–अलग शिक्षा संस्थानों में शिक्षणकार्य कर रहे हैं या शिक्षण नीतियाँ बनाने इससे संबंधित प्रशासनिक कार्यों में संलग्न हैं।

प्रो. तृप्ता त्रिवेदी और अभिलाषा झा मिश्रा ने बी.एड. और एम.एड. के पाठ्यक्रम ढांचे की विस्तृत व्याख्या करते हुए बताया कि किस प्रकार यह पाठ्यक्रम शिक्षण को शोध, उद्यमिता और मूल्यनिष्ठ शिक्षा से जोड़ता है। उन्होंने कहा की यह सम्मेलन शिक्षक शिक्षा के क्षेत्र में न केवल नीति निर्माण का मंच बना, बल्कि बी.एड. को एक नए अध्याय के रूप में स्थापित करने की दिशा में मील का पत्थर साबित हुआ। इस अवसर पर एनसीटीई के सदस्य सचिव अभिलाषा झा मिश्रा, डीन एकेड. मिक अफेयर्स प्रो. दिनेश कुमार, डीन ऑफ कॉलेजेज प्रो. बृजेश साहनी, प्रो. संजीव शर्मा, प्रो. परमेश कुमार, प्रो. अनिता दुआ, लोक संपर्क विभाग के निदेशक प्रो. महा. सिंह पूनिया सहित कई गणमान्य लोग उपस्थित रहे। उल्लेखनीय है कि शिक्षा के नवीन स्वरूप के इस विमर्श को प्रतिभ. ागियों ने विभिन्न प्रश्नों से समदध किया और इसे बहुत नई चीजें सिखाने वाला अनुभव बताया।

समारोह में कुवि कुलपति ने केंद्रीय मंत्री को सम्मानित किया

केयू व स्वदेशी शोध संस्थान द्वारा आयोजित सम्मेलन में पहुंचे केंद्रीय कृषि मंत्री

कुवि परिसर : कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय व स्वदेशी शोध संस्थान, दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में नई दिल्ली स्थित भारतीय कृषि अनुसंधान केन्द्र में 'विजन 2047: समृद्ध और महान भारत' विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया। आयोजन में कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो सोमनाथ सचदेवा व कई विभागों के शिक्षकों ने भागीदारी की । कुलपति प्रो. सोमनाथ सचदेवा ने केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी व शिवराज सिंह चौहान को स्मृति चिन्ह देकर स्वागत किया । इस तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के प्लेनरी सत्र में बतौर मुख्यातिथि केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि बढ़ते तापमान, पर्यावरण असंतुलन के बावजूद भी अन्न उत्पादन में भारत अव्वल है और दूसरे देशों को भी अन्न उपलब्ध करवा रहा है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में गौरवशाली, शक्तिशाली भारत के निर्माण का अभियान चला हुआ है। आज भारत देश में अन्न के भंडार समृद्ध हैं। शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि उत्पादन बढ़ाने के लिए अच्छे बीज चाहिए। इसके लिए आईसीआर कार्य कर रहा है।

वर्तमान समय में पानी बचाना जरूरी है तथा उत्पादन बढ़ाने के लिए कम पानी में ज्यादा सिंचाई, नई कृषि पद्धति की आवश्यकता है। उत्पादन की लागत घटाने के लिए उन्नत बीज की आवश्यकता है। उत्पादन के ठीक दाम मिले इसके लिए भारत सरकार द्वारा एमएसपी की व्यवस्था की गई है जिससे किसानों को समृद्ध बनाने का कार्य किया जा रहा है। कीटनाशकों के उपयोग के कारण धरती का उपजाऊपन खत्म हो रहा है। मनुष्य बीमार हो रहा है, नदियां प्रदूषित हो रही हैं और पशु–पक्षी खत्म हो रहे हैं।

केंद्रीय मंत्री ने कहा कि पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि से प्राकृतिक कृषि की आवश्यकता है। इसके लिए 18 लाख 75 हजार लोगों को प्राकृतिक कृषि का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। इसलिए धरती से केवल उतना लो जितनी उसकी भरपाई हो सके। हमारे लिए पेड़–पौधे मनुष्य समान, गाय पशु नही– मातृ तुल्य है,और नदियां हमारी पवित्र माताएं हैं। इन संस्कारों से प्रेरणा लेकर हमें प्रकृति का संरक्षण करना होगा। भारत विश्व की तीसरी अर्थव्यवस्था जल्द बनने वाला है। भारत के निर्माण में सामर्थ्य व क्षमता के साथ काम करें ताकि विकसित भारत का संकल्प पूरा किया जा सके।

मानव कल्याण और परोपकार पर आधारित है यूथ रेडक्रॉस प्रो. सोमनाथ सचदेवा

कुवि में विश्व रेडक्रास दिवस पर कार्यक्रम का आयोजन

कुवि परिसर : यूथ रेडक्रॉस सोसायटी सात सिद्धांतों पर आधा. रित है जो मानव कल्याण के लिए परोपकार व सेवाभाव से कार्य कर रही है। मानवता, निष्पक्षता, तटस्थता, स्वाधीनता, स्वैच्छिक सेवा, एकता व सार्वभौमिकता के सिद्धांतों की नींव पर रेडक्रॉस की इमारत खड़ी है। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय तथा इससे सम्बन्धित कॉलेजों की यूथ रेडक्रॉस सोसायटी समाज कल्याण में अपना अमूल्य योगदान दे रही है। यह विचार कुवि के कुलपति प्रो. सोमनाथ सचदेवा ने सीनेट हॉल में कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के यूथ रेडक्रॉस द्वारा विश्व रेडक्रॉस दिवस पर आयोजि. जत कार्यक्रम में बतौर मुख्यातिथि व्यक्त किए। इससे पहले दीप प्रज्ज्वलित कर व रेडक्रॉस अभियान को जन्म देने वाले महान मानवता प्रेमी जीन हेनरी डयूनेन्ट को पुष्प अर्पित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। कुलपति ने कहा कि रेडक्रॉस विश्व की सबसे बड़ी यूथ आर्गेनाईजेशन है। यह पहला संस्थान था जो कि युद्ध में घायल सैनिकों की देखभाल के लिए बनाया गया था। रेडक्रॉस सोसायटी का गठन जब से हुआ है तब से रेडक्रॉस के स्वयंसेवक विभिन्न प्रकार की आपदाओं में निरंतर निस्वार्थ भावना से अपनी सेवाएं दे रहे हैं। यह विश्व की एक ही संस्था है जिसको तीन बार नोबल शांति पुरस्कार मिला है। संवेदनाओं के साथ कार्य करने के लिए मनुष्य को श्रेष्ठ माना गया है। आज के परिप्रेक्ष्य में जो गंभीर हालात बन रहे हैं उसमें यूथ रेड क्रास की भू. मिका महत्वपूर्ण होने वाली है। कुवि के वालंटियर्स व स्वयं सेवकों ने कोविड के समय व इसके बाद आई बाढ़ में बाढ़ पी. ड़ितो को निस्वार्थ भाव से भोजन व राशन पहुंचाया। कुलपति ने कहा कि भारत विश्व का सबसे युवा देश है। 15 से 29 साल की उम्र के 37 करोड़ युवा हमारी ताकत हैं। हमारे देश का भविष्य उज्ज्वल है। छात्र कल्याण अधिष्ठाता प्रो. ए.आर. चौधरी ने कहा कि सारी मानवता एक है। सभी का दुख एक है और जो सक्षम है उसे दूसरों का दुख कम करने के लिए प्रयत्न करना चाहिए। इसी उद्देश्य व ध्येय को लेकर ही यूथ रेड क्रास संस्था बनी है। उन्होंने स्वयं सेवकों को मानवता के लिए कार्य करने के लिए प्रेरित किया।

कुवि के यूथ रेडक्रॉस कोऑर्डिनेटर प्रो. डी. एस. राणा ने सभी अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि यह वैश्विक एकता का दिन है, जो उन स्वयं सेवकों के साहस और प्रयासों को दर्शाता है जो कठिन परि. स्थितियों में काम करते हैं। आपदा प्रबंधन, सामाजिक बुराईया, रक्तदान, स्वच्छता अभियान, कोरोना काल, अन्य संकट सहित विभिन्न क्षेत्रों में रेडक्रास स्वयं सेवकों ने हमेशा महत्वपूर्ण काम किया है। इस अवसर पर छात्र कल्याण अधिष्ठाता प्रो. ए.आर. चौधरी, यूथ रेडक्रॉस कोऑर्डिनेटर प्रो. डी.एस.राणा, प्रो. एस.के.चहल, प्रो. विवेक चावला, प्रो. रीटा, प्रो. निरुपमा भट्टी, डॉ. मंजू नरवाल, डॉ. चेतन शर्मा, फील्ड कोऑर्डिनेटर डॉ. संतोष कुमार, डॉ. राजेश राजौंद, डॉ. दिविज, योगेश सहित विभिन्न कॉलेजों के प्रोग्राम कोऑर्डिनेटर व वालंटियर्स मौजूद थे।

19 वर्षीय धरोहर : शिक्षा मंत्री ने की मुक्तकंठ प्रशंसा

नौ राज्यों से आए 150 से अधिक प्रतिनिधियों ने भी देखी 'धरोहर'

दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन में उत्तर भारत के नौ राज्यों से आए प्रतिनिधि संग्रहालय का अवलोकन करने के बाद कुलपति प्रो. सोमनाथ सचदेवा के साथ धरोहर हरियाणा संग्रहालय के सम्मुख उपस्थित।

दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन में उत्तर भारत के नौ राज्यों– हरियाणा, पंजाब, हिमाचल, चंडीगढ़, जम्मू कश्मीर, लद्दाख, दिल्ली, उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखंड, से आए 150 से अधिक प्रतिनिधियों ने 28 अप्रैल को धरोहर के स्थापना दिवस पर संग्रहालय का अवलोकन किया। उन्होंने धरोहर के माध्यम से हरियाणवी संस्कृति को समझा तथा हरियाणवी लोक परम्परा एवं ग्राम्य संस्कृति की सराहना की। इस अवसर पर कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सोमनाथ सचदेवा ने सभी को केयू धरोहर हरियाणा संग्रहालय के 19 वर्ष पूरे होने पर बधाई दी। कुलपति ने कहा कि कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय का ध रोहर संग्रहालय हरियाणा की सांस्कृतिक विरासत को सहेजने का काम कर रहा है। 28 अप्रैल 2006 को जिस पौधे को कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय ने रोपा था आज वह हरियाणा की सांस्कृतिक विरासत का प्रतीक बनते हुए नई पीढ़ी को अपनी गौरवशाली संस्कृति के बारे में बता रहा है। धरोहर को स्थापित करने के सुखद परिणाम प्राप्त हुए हैं। आज धरोहर संग्रहालय कुरुक्षेत्र की पहचान का एक प्रतीक बन चुका है। संग्रहालय ने पिछले 19 वर्षों में हरियाणवी संस्कृति की पहचान को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर स्थापित कर लाखों पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित किया है। धरोहर हरियाणा संग्रहालय में 50 से अधिक गैलरी हैं जिनके माध्यम से हरियाणवी लोक संस्कृति के दर्शन होते हैं। बीते दिनों हरियाणा के शिक्षा मंत्री महिपाल ढांडा ने धरोहर संग्रहालय का अवलोकन कर कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय की खुले दिल से प्रशंसा की। शिक्षा मंत्री ने कहा कि धरोहर संग्रहालय हरियाणा ही नहीं अपितु पूरे भारत का एकमात्र ऐसा संग्रहालय है जिसके माध्यम से हरियाणा की सांस्कृतिक विरासत को दर्शाया गया है। उन्होंने धरोहर संग्रहालय में रखा मिट्टी का ताशा भी बजाकर देखा। उन्होंने कहा कि संग्रहालय युवा पीढ़ी को अपनी सांस्कृतिक विरासत से जोड़ने का एक माध्यम है। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय देश का एकमात्र ऐसा विश्वविद्यालय है जिसने अपनी संस्कृति को संरक्षित करने के लिए धरोहर जैसे संग्रहालय को स्थापित किया। समाज में जिस तरह से आज विकृतियां बढ़ रहीं हैं, ऐसे में जीवन मूल्यों की रक्षा के लिए ऐसे संस्थानों की स्थापना करना जरूरी है। इस अवसर पर हरियाणा राज्य उच्च शिक्षा परिषद के अध्यक्ष प्रो. कैलाश चन्द्र शर्मा, प्रो. एस. के. गक्खड़, कुलसचिव ले. डॉ. वीरेन्द्र पाल, डीन ऑफ कॉलेजिज प्रो. ब्रजेश साहनी, लोक सम्पर्क विभाग के निदेशक प्रो. महासिंह पूनिया, प्रो. परमेश कुमार सहित गणमान्य लोग मौजूद रहे।

पुस्तकें हमें अपनी सभ्यता एवं संस्कृति से जोड़ती हैं : प्रो. संजीव शर्मा

केयू पंजाबी विभाग में 'उस्तादी ए कवि साईं मियां मीर जी' पुस्तक पर व्याख्यान आयोजित

कुवि परिसर : कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर सोमनाथ सचदेवा के मार्गदर्शन में पंजाबी विभाग द्वारा 'उस्तादी ए कवि साईं मियां मीर जी' पुस्तक पर एक परिचर्चा में केयू पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग के अध्यक्ष प्रो. संजीव शर्मा ने बतौर मुख्य वक्ता कहा कि पुस्तकें हमें अपनी सभ्यता एवं संस्कृति से जोड़ने का कार्य करती है। इसके साथ ही इनको पढ़ने से हमें ऐतिहासिक घटनाओं एवं सांस्कृतिक परम्पराओं को जानने का अवसर भी मिलता है। इस मौके पर पंजाबी विभाग के अध्यक्ष डॉ. कुलदीप सिंह ने सभी अतिथियों का स्वागत एवं परिचय करवाया तथा साईं मियां मीर जी के बारे में विस्तार से बताया। कार्यक्रम में कविश्री विकास मंच, तलवंडी साबो, पटियाला के दर्शन सिंह पसियाना ने दूसरे मुख्य वक्ता के रूप में कहा कि धर्म और सत्य का संबंध घनिष्ठ है। उन्होंने कहा कि साईं मियां मीर और जहांगीर की धर्म के प्रति कैसी भावना थी? यह इस पुस्तक से स्पष्ट हो जाता है। 33 कवियों की रचनाओं से युक्त यह पुस्तक कविश्री काव्यात्मक रूप में लिखी गई है, जिसमें विराम चिन्हों पर विशेष ध्यान दिया गया है। कुलवंत सिंह सैदोके ने कहा कि यह पुस्तक साईं मियां मीर के बारे में है जिन्होंने हरमंदिर साहिब की नींव रखी थी। उन्होंने छात्रों को छंद के नियमानुसार तथा कविश्री के मधुर शब्दों के माध्यम से कविता लिखने की विधि भी साझा की। सुंदरपाल कौर राजासांसी, संरक्षक साईं मियां मीर हंबल फाउंडेशन, कनाडा ने बतौर विशिष्ट अतिथि साईं मियां मीर जी द्वारा हरमंदिर साहिब के मैदान में जातिगत भेदभाव को दूर करने की बात कही। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्रो. पुष्पा रानी, अधिष्ठाता, कला एवं भाषा संकाय ने सुंदरपाल कौर राजासांसी के व्यक्तित्व और कार्य के प्रति समर्पण के बारे में बताया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. लता खेड़ा व धन्यवाद डॉ. गुरप्रीत सिंह साहूवाला द्वारा किया गया। इस अवसर पर शिक्षक, शोधार्थी एवं विद्यार्थी मौजूद रहे।

प्रतियोगिताएं मानसिक एवं बौद्धिक विकास में सहायक : प्रो. सुशीला चौहान

विधि संस्थान में भारतीय संविधान के 75 वर्ष पर प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता हुई

कुवि परिसर : कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर सोमनाथ सचदेवा के मार्गदर्शन में केयू विधि संस्थान में जनजातीय गौरव दिवस एवं संविधान दिवस 2025 के उपलक्ष्य में भारतीय संविधान के 75 वर्ष पर बौद्धिक एवं ज्ञानवर्धक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता आयोजित हुई। इस अवसर पर विधि संस्थान की निदेशिका प्रो. सुशीला चौहान ने कहा कि प्रतियोगिताएं विद्यार्थियों के मानसिक एवं बौद्धिक विकास में सहायक होती हैं। उन्होंने कहा कि यह क्विज प्रतियोगिता न केवल प्रतिभागियों की संवैधानिक समझ का परीक्षण था, बल्कि यह प्रतियोगिता भारत के संविधान से संबंधित मूल्यों, अधिकारों, कर्तव्यों एवं देश के निर्माण में जनजातीय समुदायों की भूमिका के प्रति जागरूकता फैलाने का एक सशक्त माध्यम भी बनी। संस्थान के उप–निदेशक डॉ. रमेश सिरोही ने कहा कि यह कार्यक्रम विधि संस्थान की शैक्षणिक उत्कृष्टता, नागरिक जागरूकता एवं राष्ट्र निर्माण के प्रति प्रतिबद्धता का प्रतीक है। प्रतियोगिता में विधि संस्थान के लगभग 55 छात्रों ने उत्साहपूर्वक भाग लेकर संवैधानिक ज्ञान, जागरूकता एवं शैक्षणिक उत्साह का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया जिसमें 3 चरणों को पार करने के बाद रोहित अत्री, खुशी, काजल तथा वंशिका विजेता रहे। वहीं सुकृत खुराना, पारस, पायल एवं प्रिया उपविजेता रहीं । प्रतियोगिता का संयोजन डॉ. मनजिंदर गुल्यानी व डॉ. रमेश सिरोही की देखरेख में किया गया, जबकि डॉ. जतिन ने आयोजक की भूमिका निभाई। छात्र आयोजक कुशाल, जयशिखा, इशिका गोयल और उत्तम सिंह ने इस पूरे आयोजन को सफल एवं सुचारू रूप से संपन्न कराने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

इंटरनेट की माया पर भारी लाइब्रेरी का जादू

कुवि के जवाहरलाल नेहरू पुस्तकालय में 2100 सीट विद्यार्थियों से भरी रहती हैं। विद्यार्थियों ने बताया कि पुस्तकालय में बैठकर पढ़ने और हार्ड फॉर्म में किताब से फैक्ट जानने का दूसरा विकल्प नहीं

निकिता सैनी / सिद्धार्थ

कुवि परिसर : इंटरनेट की माया पर किताबों और पुस्तकालय का जादू कैसे भारी पड़ रहा है, इसकी गवाही दे रहा है कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय का जवाहरलाल नेहरू पुस्तकालय। पुस्तकालय लगभर हर रोज विद्यार्थियों से भरा रहता है और आजकल के परीक्षा के दिनों में तो एक भी कुर्सी खाली नहीं मिलती बल्कि पाठकों की भीड़ के चलते अतिरिक्त कुर्सियों का प्रबंध करना पड़ रहा है।

यह दृश्य किसी को भी हैरानी से भर सकता है कि मोबाइल व लैपटॉप को किनारे रख भारी संख्या में विद्यार्थी सुबह से रात तक यहां अध्ययन करते हैं। कुल 1800 लोगों के बैठने की स्थायी व्यवस्था इस समृद्ध और विशाल पुस्तकालय में है पर परीक्षा के दिनों में अतिरिक्त व्यवस्था के तौर पर 300 से अधिक प्लास्टिक की कुर्सियों का प्रबंध विश्वविद्यालय प्रशासन ने किया है।

डिजिटल युग में पुस्तकालय में किताबें खोजकर पढ़ रहे कुवि के विद्यार्थियों के अनुभव जानने निकली न्यूज लेटर की

कुवि की सेंट्रल लाइब्रेरी में विद्यार्थियों से भरी सीटें

पुस्तकालय अध्यक्ष से साक्षात्कार करती केयू न्यूज लैटर की टीम

टीम जब वहां पहुंची तो अतिरिक्त कुर्सियां भी विद्यार्थियों से भरी पाई गई।

अधिकांश विद्यार्थियों का कहना था कि निश्चित रूप से इंटरनेट के कारण सूचना क्रांति आई है और इसका अपना अलग महत्व भी है पर एक सीमा के बाद यह पारंपरिक किताबों और लाईब्रेरी का विकल्प नहीं बन पाता। छात्र गोविंद ने कहा कि जिस तरह किताब में बड़े व्यवस्थित क्रम में रिसर्च के साथ कन्टेन्ट होता है, वो संतुष्टि इंटरनेट पर सर्च इंजन से नहीं मिल सकती। दूसरे लाईब्रेरी में जो पढ़ने का अनुशासित वातावरण मिलता है, वो कहीं और नहीं मिलता। एमएससी के छात्र सुमित ने कहा कि पारंपरिक लाईब्रेरी और किताब का विकल्प खोजना मुश्किल है। हिंदी विषय के शोधार्थी गौरव अपने एमए के दिनों से निरंतर पुस्तकालय आकर सुबह से रात तक पढ़ रहे हैं। गौरव का मानना है कि लाईब्रेरी का विकल्प कोई चीज कैसे बन सकती है। बड़े तपे हुए विशेषज्ञों ने एक तथ्य को खोज–खोजकर जो किताबें लिखीं है, वैसी पुष्ट सामग्री इंटरनेट पर सहज सुलभ नहीं है। औसत तौर पर रोज 150 से अधिक किताबें विद्यार्थी घर पर पढ़ने के लिए भी जारी करवा रहे हैं।

कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के मुख्य पुस्तकालयाध्यक्ष चेतन शर्मा ने केयू न्यूज लेटर टीम से बातचीत में बताया कि लाईब्रेरी में कुल 4 लाख 11 हजार पुस्तकें उपलब्ध हैं। पिछले दो साल में लगभग 8 से 10 हजार तक पुस्तकें खरीदी गई हैं। इसके अतिरिक्त 1300 इलेक्ट्रॉनिक पत्रिकाओं का अभिगम है। यह विश्वविद्यालय के लिए एक बड़ी उपलब्धि है। उन्होंने कहा कि इस डिजिटल युग में भले ही कितनी तेज़ी से परिवर्तन आया हो पर युवाओं की स्टैंडर्ड किताबें पढ़ने की अभिरुचि बचाए रखना हमारा जिम्मा है।

जीवन में सफलता के लिए कड़ी मेहनत और समर्पण की भावना आवश्यकः प्रो. महावीर नरवाल

विद्यार्थियों ने यूजीसी नेट परीक्षा उतीर्ण करने की सीखी बारीकियां

कुवि परिसर : जीवन में सफलता प्राप्त करने में लिए कड़ी मेहनत और समर्पण की भावना आवश्यक है। यह लेक्चर विभाग के नियमित आयोजनों और गतिविधियों के माध्यम से छात्रों के ज्ञान और कौशल को बढ़ाने के निरंतर प्रयासों का हिस्सा है। यह विचार वाणिज्य विभाग के अध्यक्ष प्रोफेसर महाबीर नरवाल ने कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सोमनाथ सचदेवा के मार्गदर्शन में वाणिज्य विभाग द्वारा यूजीसी नेट तैयारी पर आयोजित एक्सटेंशन लेक्चर में व्यक्त किए। प्रो. महाबीर नरवाल ने कहा कि इस कार्यक्रम का उद्देश्य एम.कॉम प्रथम और अंतिम वर्ष के छात्रों को यूजीसी नेट परीक्षा में उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए मूल्यवान सुझाव और तरकीबों को बताना था। शोधार्थी पुरषोत्तम गुप्ता और हिमांशी मलिक द्वारा लेक्चर आयोजित किया गया जिन्होंने यूजीसी नेट परीक्षा को उत्तीर्ण करने के लिए मूल्यवान सुझाव और रणनीति साझा कीं। उन्होंने नेट की तैयारी के लिए आवश्यक पुस्तकों के बारे में बताया। उन्होंने छात्रों के संदेहों और प्रश्नों का समाधान भी किया, जिससे परीक्षा के विभिन्न पहलुओं पर स्पष्टता प्रदान की गई।

सुरक्षित भविष्य के लिए पर्यावरण का संरक्षण महत्वपूर्ण : एसडीएम अनिल कुमार भारद्वाज

डलहौजी में पांच दिवसीय केयू यूथ रेडक्रॉस शिविर सम्पन्न

कुवि परिसर : कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर सोमनाथ सचदेवा के मार्गदर्शन में हिमाचल प्रदेश के डलहौजी में पांच दिवसीय केयू यूथ रेडक्रॉस शिविर के समापन अवसर पर एसडीएम अनिल कुमार भारद्वाज ने कहा कि सुरक्षित भविष्य के लिए पर्यावरण का संरक्षण महत्वपूर्ण है। पर्यावरण के प्रति अपनी जिम्मेदारी को समझते हुए केयू यूथ रेडक्रॉस का यह जागरूकता शिविर इस उद्देश्य में सफल रहा। यूथ रेडक्रॉस के प्रोग्राम कोऑर्डिनेटर प्रो. दिनेश सिंह राणा के नेतृत्व में आयोजित शिविर में हरियाणा के विभिन्न जिलों से 11 कॉलेजों की टीम ने भाग लिया जिसमें 112 स्वयंसेवक एवं 10 काउंसलर्स शामिल हुए। समापन अवसर पर पांच दिवसीय शिविर में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले प्रतिभागियों को मेडल व प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। शिविर में बेस्ट कैंपर अवार्ड आरकेएसडी कॉलेज, कैथल के युवराज सिंह, केयू आईआईएचएस से संजना मेहरा तथा जीएमएन कॉलेज से सपना को दिया गया। प्रो. डीएस राणा ने सफल आयोजन के लिए सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया। शिविर में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए योगेश जांगड़ा स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। प्रोग्राम कोऑर्डिनेटर प्रो. डीएस राणा ने शिविर की विस्तृत जानकारी देते हुए बताया कि 19 अप्रैल से 23 अप्रैल 2025 तक डलहौज़ी के यूथ होस्टल में आयोजित यूथ रेडक्रॉस शिविर का उद्घाटन रजनीश महाजन, डिविजनल फोरेस्ट ऑफिसर, डलहौजी, हिमाचल प्रदेश ने बतौर मुख्यातिथि किया। उन्होंने बताया कि हिमाचल राज्य लगभग 68 प्रतिशत जंगलों से ढका हुआ है तथा हिमाचल सरकार पर्यावरण संरक्षण तथा पेड़–पौधों की देखभाल के लिए प्रतिबद्ध है। प्रो. डीएस राणा ने बताया कि शिविर में प्रो. निरूपमा भट्टी ने प्रातः 6 बजे स्वयंसेवकों को योग करवाया तथा सोनिया भारद्वाज द्वारा प्राथमिक चिकित्सा प्रशिक्षण दिया गया। इस कैंप में फील्ड ऑफिसर डॉ. संतोष कुमार, यूथ होस्टल के प्रबंधक देवेंद्र शर्मा सहित स्वयंसेवक मौजूद रहे।

अच्छा जनसंपर्क आत्मविश्वास और मनोविज्ञान के साथ सशक्त होता हैः डॉ. प्रीतम सिंह

कुवि परिसरः अच्छे जनसम्पर्क के लिए, विद्यार्थियों को घुमक्कड़ बनना होगा जिससे विद्यार्थियों को अधिक से अधिक लोगों से मिलने का अवसर मिले सके और यह अवसर उन्हें अधिक से अधिक बोलियों के और भाषाओं के शब्दों को सीखने का अवसर देगा। यह कहना है डॉ. भीमराव रामजी अम्बेडकर अध्ययन शोध संस्थान, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के निदेशक डॉ. प्रीतम सिंह का, जो जनसंचार एवं मीडिया संस्थान के मिनी ऑडिटोरियम में राष्ट्रीय जनसम्पर्क दिवस पर बतौर मुख्य वक्ता विद्यार्थियों को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि मजबूत जनसम्पर्क का आधार भाव ही है क्योंकि भाव सशक्त होता है तो जनसम्पर्क भी सशक्त होगा। डॉ. प्रीतम ने कहा कि हरियाणा के जितने भी घुमक्कड़ और बातूनी प्रवृति के लोग हैं उनका जनसम्पर्क अन्य लोगों से अधिक सशक्त होता है। जनसम्पर्क भी तभी सशक्त होता है जब व्यक्ति का 'सम्पर्क' अच्छे आत्मविश्वास और मनोविज्ञान के साथ सशक्त हो। इसलिए विद्यार्थियों को राष्ट्रीय जनसम्पर्क दिवस पर अच्छे जनसम्पर्क के लिए भाषा ज्ञान के साथ–साथ अच्छे 'सम्पर्क' पर ध्यान देना चाहिए। इस अवसर पर कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए जनसंचार एवं मीडिया प्रौद्योगिकी संस्थान के निदेशक, प्रोफेसर महासिंह पूनिया ने मुख्य वक्ताओं का स्वागत करते हुए कहा कि हरियाणा के गांवों में आपसी जनसम्पर्क चौपाल, तालाबों, कुंओं, खेत–खलिहानों, रीति–रिवाजों, सांस्कृतिक कार्यक्रमों, धार्मिक कार्यक्रमों आदि से बनता है और इसी जनसम्पर्क से समाज, राज्य, राष्ट्र का सशक्त निर्माण होता है। प्रोफेसर पूनिया ने कहा कि संस्थान का यही प्रयास है कि हम आपसी जनसम्पर्क के माध्यम से समाज और राष्ट्र निर्माण में अपनी सशक्त भूमिका निभा सके। इस अवसर पर लोक गायक एवं सूचना जनसम्पर्क विभाग, हरियाणा के पूर्व अधिकारी डॉ. सूरजभान बेदी ने कहा कि सरकार अपनी नीतियों का प्रचार–प्रसार लोकहित हेतु सांग, भजन, रागनियों, नुक्कड़ नाटकों, कविताओं और लोक कहानियों के माध्यम से जनसम्पर्क करती हैं। उन्होंने कहा कि व्यक्ति, समाज का जितना अच्छा जनसम्पर्क होगा उतना ही विकसित होगा। इस अवसर पर दूसरे सत्र में डिजिटल सांउड की कार्यशाला में साउंड एक्सपर्ट डॉ. सुधीर शर्मा ने कहा कि संगीत के विभिन्न रसों के माध्यम से स्वरों के साथ अच्छे जनसम्पर्क का निर्माण होता है। उन्होंने विद्यार्थियों को 'स्वर साधना' के साथ विभिन्न रसों की विस्तृत जानकारी भी दी। उन्होंने कहा कि अच्छा संगीत ही अच्छे जनसंपर्क का निर्माण करता है और अच्छा जनसम्पर्क ही अच्छे संगीत को जन–जन तक पहुंचाता है।

डॉ. सुधीर शर्मा ने विद्यार्थियों को अपनी सांउड डिजाइन कार्यशाला में वीडियो एवं पॉडकास्ट के लिए, साउंड डिजाइन की महत्वपूर्ण जानकारी पॉवरपॉइंट प्रेजेंटेशन के माध्यम से दी। उन्होंने विद्यार्थियों को सांउड की तकनीकी बारिकियों को प्रैक्टिकल रूप से समझाया। इसके तहत उन्होंने विभिन्न सांउड इफैक्ट्स, साउंड के मनोविज्ञान, ईको, एवं साउंड कंपोज़िंग की विस्तृत जानकारी दी। इस अवसर पर संस्थान के असिस्टेंट प्रोफेसर व एक्टिविटी इंचार्ज डॉ. आबिद अली ने मंच का सफल संचालन दो विद्यार्थियों मानसी और कमल के साथ किया। इस अवसर पर मुख्य रिसोर्सपर्सन ने विद्यार्थियों के द्वारा पूछे गए करियर, चुनौतियां, प्रैक्टिकल व समय प्रबंधन से संबंधी प्रश्नों के उत्तर दिये। इस अवसर पर शिक्षक, शोधार्थी एवं विद्यार्थी संस्थान के मिनी ऑडिटोरियम में मौजूद रहे।

भक्ति–शक्ति यात्रा का केयू शिक्षकों एवं अधिकारियों ने किया स्वागत

कुवि परिसर : हिमाचल प्रदेश से मां ज्वाला देवी की दिव्य ज्योति शक्ति यात्रा के शनिवार को कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के तृतीय द्वार पर पहुंचने पर कुवि कुलसचिव ले. डॉ. वीरेन्द्र पाल सहित शिक्षकों एवं अधिकारियों ने दिव्य ज्योति के दर्शन किए। इस अवसर पर कुवि कुलसचिव ले. डॉ. वीरेन्द्र पाल ने कहा कि यह भक्ति–शक्ति यात्रा अध्यात्म एवं सामाजिक समरसता का प्रतीक है। उन्होंने कहा कि आध्यात्मिकता भारतवर्ष की पहचान रही है इसलिए देश की आध्यात्मिक शक्ति को संग्रहित कर इसे राष्ट्र निर्माण के कार्यों में लगाना हमारा परम कर्त्तव्य है। मां ज्वाला जी की दिव्य ज्योत के दर्शन मात्र से निश्चित ही सभी का जीवन प्रकाशमान होगा तथा आलौकिक आनंद की प्राप्ति भी होगी। उन्होंने कहा कि सनातन परम्परा के अनुसार यह दिव्य ज्योत आध्यात्मिकता, सामाजिक समरसता, सनातन चेतना, शक्ति एवं ऊर्जा का भी आधार है। इस मौके पर प्रो. एआर चौधरी, प्रो. सुशीला चौहान, प्रो. अमित लूदरी, डॉ. अतुल रशिका, डॉ. मीरा चौधरी, डॉ. सुखविन्द्र, डॉ. सुनील भारती सहित बड़ी संख्या में केयू शिक्षक, कुलपति के ओएसडी पवन रोहिला, सहायक कुलसचिव डॉ. जितेन्द्र जांगड़ा व छात्रगण मौजूद रहे।

कवि दरबार में पंजाबी साहित्य क्षेत्र की नई पुस्तकों का हुआ विमोचन

कुवि परिसरः कुवि के कुलपति प्रो. सोमनाथ सचदेवा के मार्गदर्शन में पंजाबी साहित्य सभा, पंजाबी विभाग और हरियाणा केंद्रीय पंजाबी लेखक सभा के संयुक्त तत्वाधान में 3 मई को विश्वविद्यालय के फैकल्टी लॉन्ज में हरियाणवी पंजाबी कवियां दे अंग संग कवि दरबार का आयोजन किया।

मुख्य अतिथि प्रोफेसर नरविंदर सिंह कौशल पूर्व, डीन, भाषा एवं कला संकाय, कुवि ने कहा कि पंजाबी कविता मानवीय भावनाओं को व्यक्त करने का एक सशक्त माध्यम है।

ऐसे कवि दरबारों के माध्यम से नई पीढ़ी में भाषा और संस्कृति के प्रति रुचि पैदा होती है। यह मंच पंजाबी साहित्य की सेवा करने वाले कवियों को नई प्रेरणा प्रदान करता है । कार्यक्रम की शुरुआत में पंजाबी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. कुलदीप सिंह ने कार्यक्रम में पहुंचने वाले सभी अतिथियों व कवियों का स्वागत करते हुए कहा कि लेखकों की नई पीढ़ी को आगे लाकर हरियाणा का पंजाबी साहित्य विश्व के पंजाबी साहित्य के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलेगा।

इस सम्मेलन में सुदर्शन गासो, अध्यक्ष, हरियाणा केंद्रीय पंजाबी लेखक सभा ने स्वागत भाषण देते हुए हरियाणा के साहित्यिक क्षेत्र में पंजाबी की स्थापना की बात करते हुए कहा कि हम सदैव पंजाबी साहित्य और लेखकों की सेवा के लिए तत्पर रहे हैं।

इसके बाद हरियाणा पंजाबी साहित्य की तीन पुस्तकें मिट्टी बोल पई, बाल नाटक संग्रह, मनजीत कौर अम्बालवी, बैठा सोढ़ी पातिसाहु, महाकाव्य, गुरदयाल सिंह निमर और अन्तर युद्ध, काव्य संग्रह, डॉ. बलवान औजला आदि पंजाबी साहित्य क्षेत्र की नई पुस्तकों का विमोचन किया गया।

कुवि कुलसचिव ले. डॉ. वीरेन्द्र पाल ने किया देवीलाल हॉस्टल का निरीक्षण

कुवि परिसर : कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. वीरेन्द्र पाल ने सोमवार को कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के देवीलाल हॉस्टल में औचक निरीक्षण किया व हॉस्टल में छात्रों के साथ बैठकर दोपहर का लंच भी किया। इस अवसर पर उनके साथ चीफ वार्डन प्रोफेसर जसबीर ढांडा भी मौजूद रहे। कुलसचिव डॉ. वीरेन्द्र पाल ने कहा कि कुवि कुलपति प्रो. सोमनाथ सचदेवा के निर्देशानुसार कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों के चहुंमुखी विकास के साथ–साथ उनको हर तरह की सुविधाएं उपलब्ध करवाने के लिए प्रतिबद्ध है। देवीलाल हॉस्टल में कुलसचिव डॉ. वीरेन्द्र पाल ने छात्रों से बातचीत की व खाने की गुणवत्ता की भी जांच की। उन्होंने विद्यार्थियों को हर प्रकार की सुविधाएं उपलब्ध करवाने व किसी भी प्रकार की समस्या आने पर उसके समाधान का आश्वासन दिया।

आईआईएचएस की स्थानेश्वर पत्रिका का कुलपति ने किया विमोचन

कुवि परिसर : विद्यार्थियों की लेखन प्रतिभा का आईना बनी आईआईएचएस संस्थान द्वारा प्रकाशित स्थानेश्वर पत्रिका का कुल. पति प्रो सोमनाथ सचदेवा ने विमोचन किया । विमोचन में कुल सचिव डॉ वीरेंद्र पॉल व संस्थान प्राचार्य सहित कई शिक्षक उप. स्थित थे। इस पत्रिका में विद्यार्थियों ने विभिन्न विधाओं कविता, कहानी, संस्मरण व अन्य लेखों से अपनी रचनात्मक अ. भव्यक्ति को साकार रूप दिया है। इस अवसर पर कुलपति प्रो सचेदवा ने कहा कि किसी भी संस्थान की रचनात्मक एवं साहित्यिक पत्रिका वास्तव में नवोदित युवा

प्रतिभाओं को रचनात्मक कार्य में संलग्न करने का एक मूल्यवान साधन होता है। उन्होंने कहा कि सिलेबस की पढाई के साथ रचनात्मक गतिविधियां भी विद्यार्थियों के सम्पूर्ण विकास के लिए जरूरी है । कुलपति ने कहा कि यह पत्रिका अधिक से अधिक विद्यार्थियों के अंदर छिपे रचनात्मक कौशल का विकास करेगी तथा संस्थान की विशिष्ट उपलब्धियों को एक सशक्त मंच उपलब्ध कराएगी।

संस्थान की प्राचार्या डॉ. रीटा ने बताया कि यह पत्रिका संस्थान के कंप्यूटर विभाग के अध्यक्ष डॉ. अश्विनी कुश के मार्गदर्शन में शून्य लागत पर डिजाइन, संपादित और मुद्रित की गई है। यह संस्थान की वेबसा. इट पर अपलोड की गई है ।

स्टार्टअप के लिए आइडिया का होना जरूरी : कपिल मदान

कुवि परिसर : कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के वाणिज्य विभाग में स्टार्टअप गाइड को लेकर श्रीजन स्टार्टअप इनक्यूबेटर के सहयोग से एक्सटेंशन लेक्चर आयोजित किया गया। इस अवसर विभाग के अध्यक्ष प्रो. महाबीर नरवाल ने सागा म्यूजिक कंपनी के प्रोजेक्ट हेड कपिल मदान का स्वागत कियां। मुख्य वक्ता कपिल मदान ने कहा कि स्टार्टअप के लिए आइडिया का होना जरूरी हैं और इनक्यूबेशन और स्टार्टअप प्रक्रियाएं इन विचारों को सफल व्यवसायों में बदलने में सराहनीय भूमिका निभाती हैं। उन्होंने बताया कि इनक्यूबेटर स्टार्टअप में बुनियादी ढांचा, तकनीकी और पेशेवर समर्थन, बाजार अनुसंधान, सरकारी योजनाएं और इंटर्नशिप शामिल हैं। उन्होंने कहा कि इन्फोर्मेशन बहुत बडी शक्ति है और किसी भी कार्य को करने से पहले हमें सटीक और पुष्ट सूचनाओं को हासिल करना चाहिए।

प्रो. अवनेश की पुस्तक का कुलपति ने किया विमोचन

कुवि परिसर : कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सोमनाथ सचदेवा ने गुरु जम्. भेश्वर विश्वविद्यालय हिसार के पूर्व कुलसचिव व कुवि के इंस्ट्रूमेंटेशन विभाग प्रोफेसर अवनेश वर्मा की पुस्तक 'डाटा रिकवरी टेक्निक्स फॉर कंप्यूटर फोरेंसिक' का विमा. चन किया। इस अवसर पर कुलपति ने उनको इस उत्कृष्ट कार्य के लिए बधाई दी और भविष्य में और बेहतर लेखन हेतु मंगल कामना की। प्रो. अवनेश वर्मा ने बताया कि यह किताब बेन्थम बुक्स रॉबिनसन्स रोड सिंगापुर से प्रकाशित हुई है। इसमें प्रो अवनीश वर्मा के साथ प्रो. अलेक्स खंग, कैलिफोर्निया अमेरिका से, सचित धनखड़, संदीप भरद्वाज और सतीश कुमार शर्मा भ. ारत से एडिटर्स हैं। प्रो वर्मा ने बताया की

इस यह पुस्तक केवल अकादमिक जगत तक ही सीमित नहीं होगी। सामान्य व्यक्ति भी पढ़कर विज्ञान और तकनीक से संबंध बहुत सी चीजों को सहज–सरल तरीके से जान सकेंगे। जो अकादमिक जगत से जुडे हैं या किसी पेशेवर संस्थान से सम्बन्ध रखते हैं उनके लिए भी इसका बहुआयामी प्रयोग रहेगा। यह आवश्क भी है कि ज्ञान का प्रवाह आम लोगों की तरफ हो।

कुवि छात्रों ने 'फिट इंडिया साइकिल अभियान' में की भागीदारी

कुवि परिसर :कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सोमनाथ सचदेवा ने फिट इंडिया – साइकिल अभियान का शुभारंभ कियां। इस अवसर पर उन्होंने सभी शिक्षण विभागों के स्वयंसेवकों की इस साइकिल यात्रा को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। यह यात्रा कुलपति निवास से यूनिवर्सिटी मार्केट होते हुए छात्र कल्याण अधिष्ठाता कार्यालय पर जाकर सम्पन्न हुई।

इस अवसर पर कुलपति प्रो. सोमनाथ सचदेवा ने कहा कि फिटनेस हमारे जीवन का अभिन्न अंग है। मानसिक और शारी. रिक फिटनेस ही हमारी असली संपत्ति है। इस तरह की पहल देखना वाकई अच्छा है, जहां लोग साइकिल चलाने के लिए एक

साथ आ रहे हैं और आम तौर पर बेहतर स्वास्थ्य के प्रति जागरूक हो रहे हैं। मुझे खुशी है कि फिट इंडिया ऐसा कर रहा है और मुझे उम्मीद है कि यह आगे भी बढ़ता रहेगा। कुलपति प्रो. सोमनाथ सचदेवा व अन्य अधिकारियों की उपस्थिति ने सैकड़ों लोगों को स्वस्थ जीवन के प्रति संकल्प लेने के लिए प्रेरित किया।

इस अवसर पर कुलपति ने स्वयंसेवकों के अनुभवों को भी जानां।

कला प्रदर्शनी विद्यार्थियों की प्रतिभा निखारने का मंच : प्रो. दिलबाग सिंह

केयू ललित कला विभाग में तीन दिवसीय सामूहिक कला प्रदर्षनी "थ्री विजन" हुई षुरू

कुवि परिसर : कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के ललित कला विभाग में तीन दिवसीय सामूहिक कला प्रदर्शनी "थ्री विजन" का आयोजन किया गया। शुभारंभ अवसर पर इंदिरा गांधी विश्वविद्यालय, मीरपुर, रेवाड़ी के कुलसचिव प्रोफेसर (डॉ.) दिलबाग सिंह मुख्य अतिथि थें। उन्होंने कहा कि कला प्रदर्शनी विद्यार्थियों की प्रतिभा निखारने का मंच है। कला प्रदर्शनी न केवल विद्यार्थिया. के आत्मविश्वास को बढ़ाती हैं, बल्कि उनकी रचनात्मकता को भी नए आयाम प्रदान करती हैं। विद्यार्थियों को राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करने के लिए भ प्रोत्साहित किया। इस अवसर पर ललित कला विभागाध्यक्ष प्रो गुरचरण व अन्य शिक्षक उपस्थित थें।

पृथ्वी की सुरक्षा में प्रत्येक व्यक्ति की महत्वपूर्ण भूमिकाः प्रो. जितेन्द्र शर्मा

कुवि परिसर : कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के पर्यावरण अध्ययन संस्थान के तत्वावधान में विश्व पृथ्वी दिवस 2025 के अवसर पर 'हमारी शक्ति हमारा ग्रह' विषय पर एक दिवसीय राष्ट्र स्तरीय ऑनलाइन कार्यक्रम अर्थोनः 2025 का आयोजन किया गया। पर्यावरण अध्ययन संस्थान के निदेशक एवं कार्यक्रम के संयोजक प्रो. जितेन्द्र शर्मा ने कहा कि पृथ्वी की सुरक्षा में प्रत्येक व्यक्ति की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। ऊर्जा के स्रोतों में नवाचार न केवल ऊर्जा सुरक्षा को सुदृढ़ करता है, बल्कि ऊर्जा आपूर्ति पर नियंत्रण बढ़ाकर आर्थिक विकास और पर्यावरण संरक्षण दोनों को सशक्त बना सकता है। इस कार्यक्रम में देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों के छात्रों ने पोस्टर मेकिंग, स्लोगन लेखन और नि. बंध लेखन प्रतियोगिताओं में सक्रिय रूप से भाग लिया। देश भर से कुल 131 छात्र प्रविष्टियां प्राप्त हुईं। कार्यक्रम का आया. जन और निर्णायक डॉ. हरदीप राय शर्मा और डॉ. पूजा अरोड़ा (पोस्टर मेकिंग) डॉ. मीनाक्षी सुहाग और डॉ. संदीप गुप्ता (नारा लेखन) और डॉ. दीप्ति ग्रोवर और इंजी. शिवानी गर्ग (निबंध लेखन) द्वारा किया गया। डॉ. भावना दहिया, सहायक प्रोफेसर, सह–संयोजक के रूप में कार्य किया, जबकि सुश्री अंजू ने छात्र संयोजक के रूप में कार्य किया। कार्यक्रम के अंत में विद्यार्थियों ने अपने अनुभव सांझे किएं।

विद्यार्थियों को स्टेम सेल के दान के प्रति किया जागरूक

कुवि परिसर : विश्वविद्यालय की यूटीडएन. एस. एसी. इकाई –3 और यूथ सोशलग्राम फाउंडेशन के संयुक्त तत्वावधान में स्टेम सेल दाता पंजीकरण शिविर का आया. जन किया गया। यह शिविर शिक्षक संघ (कुटा) कार्यालय के निकट आईसीएच कैंटीन के पास आयोजित हुआ, जिसमें बड़ी संख्या में विद्यार्थियों, युवाओं और स्थ. ानीय लोगों ने भाग लिया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित आर्ट्स फैकल्टी की चेयरपर्सन प्रो. पुष्पा रानी ने अपने संबोधन में कहा कि स्टेम सेल दान एक महान परोपकारी कार्य है, जो गंभीर बीमारियों जैसे थैलेसीमिया, रक्त कैंसर

आदि से पीड़ित व्यक्तियों के लिए आशा की किरण बन सकता है। यह चिकित्सा क्षेत्र में एक क्रांतिकारी कदम है, जिससे किसी की जान बचाई जा सकती है। यूथ सोशलग्राम फाउंडेशन के निदेशक अमित कुमार ने बताया कि युवाओं को आगे आकर इस मुहिम का हिस्सा बनना चाहिए और ज्यादा से ज्यादा संख्या में पंजीकरण करवाना चाहिए ताकि अधिक रोगियों को नया जीवन प्रदान किया जा सके। फा. उंडेशन की ओर से आए अरविंद कुमार ने जानकारी दी कि उनकी संस्था पिछले 16 वर्षों से इस दिशा में कार्य कर रही है और अब तक लगभग 6 लाख लोग पंजीकृत हो चुके हैं। उन्होंने यह भी बताया कि अधि. क से अधिक लोगों के पंजीकृत होने से मेल खाने वाले डोनर मिलने की संभावना बढ़ती है। कार्यक्रम में एनएसएस इका. ई–3 की कार्यक्रम अधिकारी डॉ. निधि माथुर एवं स्वयंसेवकों ने लोगों को स्टेम सेल दान के महत्व, प्रक्रिया और इसके जीवन रक्षक पहलुओं के बारे में प्रेरित किया। शिविर में कुल 114 लोगों ने स्टेम सेल दान के लिए पंजीकरण करवाया, जो कि एक उत्साहजनक संख्या रही।

उल्लेखनीय है कि स्टेम सेल प्रक्रिया से उपचार बहुत ही प्रभावी साबित हो रहे है। और इसमें स्वैच्छिक स्टेम सेल दाताओं की संख्या बढाने के लिए बहुत प्रयास किए जा रहे हैं।

विश्वविद्यालय की एनएसएस इकाई का कहना है कि भविष्य में भी वो ऐसे प्रेरक कार्यक्रमों का आयोजन करते रहेंगे।

Editor's Desk

NEP-2020—Paving the Way for Enlightened Indian Educators

Prof. Dr. Maha Singh Poonia
Director,
IMC & MT

Kurukshetra University has emerged as the first university in India to fully implement the National Education Policy (NEP)-2020 across all UG and PG programs. The policy is a transformative step aimed at aligning Indian education with its rich cultural heritage while also meeting global academic standards. It seeks to reconnect students with India's glorious past, promote holistic development, and build an educational framework rooted in Indian values but responsive to modern challenges. Prime Minister Narendra Modi's vision for Viksit Bharat 2047 finds reflection in this comprehensive policy that blends tradition, innovation, inquiry, and excellence. For decades after independence, Indian education remained tethered to colonial frameworks, often neglecting its own heritage. The NEP-2020 corrects this course by emphasizing India's ancient Gurukul system and indigenous knowledge. In a significant development, a two-day National Conference on NEP-2020 was jointly organized by the National Council for Teacher Education (NCTE), New Delhi, and Kurukshetra University. This landmark event witnessed the active participation of all Vice Chancellors from Haryana, making it a milestone in collaborative academic policy implementation. The focus was on how to practically initiate new B.Ed. programs aligned with NEP goals. Key intellectual discussions centered around starting specialized B.Ed. courses in Arts, Yoga, Physical Education, and Sanskrit. There was also a broad consensus on launching one-year B.Ed. and M.Ed. programs, with plans to implement these from the upcoming academic session. This initiative will also harmonize school curricula with Indian history and values, taught in regional languages, ensuring students connect deeply with their heritage. Through this approach, NEP-2020 becomes more than just a policy it becomes a national awakening. India is poised once again to walk the path of a Vishwa Guru, with Kurukshetra University leading the academic renaissance. The transformation promises not only to educate but to enlighten, empower, and inspire.

EXPERT'S ADVICE

Dear Students, Cheers!

Dr Hardeep Joshi
Professor, Department of Psychology. KUK

Exams are around the corner and the first thing you must do is to keep stress at arm's length. Stress has existed for centuries in one form or another, but today, it has taken extreme forms. Do you know why? Constant comparison with others and chasing unfiltered dreams have become a way of life. In this digital age, exposure to others' lives makes us even more vulnerable to stress and self-doubt. So, this year, let's decide to emerge in a new form. Say goodbye to all kinds of comparisons.

Comparison is dangerous — it silently fills your heart and soul with anxiety and pressure. Be practical with your expectations. Not everyone will or needs to score above 95%. That's a hard reality. Accept it. And remember-scoring below 95 doesn't make you any less. You may have strengths in other areas. Discover and develop those! Learn to strike some balance: Neither take your exams for ganrted nor take them too seriously. Also, don't treat them as a matter of life and death. Don't be cruel to yourself in this rat race. You are full of potential. Trust yourself. Recall the greate lines of Dinkar : ***"Senani karo prayaas, ab bhavi itihaas tumhara hai, yeh nakhat amaan ke bujhhte, saara aakaash tumhara hai."*** (Fighter, make your efforts, the future history is yours; these dimming stars of the whole sky belongs to you.)

Their Love for NSS

ARJUN SINGH,
KU CAMPUS

National Service Scheme (NSS) volunteers are known for their commitment to social service and community development. At the same time, many active volunteers face the ongoing challenge of balancing their academic responsibilities with their dedication to NSS activities. Active volunteers of NSS KUK have diverse experiences.

Sujata from the Department of Sanskrit said, "I want to contribute to bringing about positive social change in my village, and NSS has made me enthusiastic and capable enough to do so. Now, it's my dream to see my village developed and aware."

Minakshi Kant from the Department of Physical Education shared, "Before I joined NSS, I was unaware of many social issues. But once I realized how much easier life became after gaining awareness, I wondered why we couldn't do the same for others who are socially unaware."

Vikas Rao from the Department of Economics mentioned, "I initially thought NSS was just about cleanliness drives and plantation drives, but attending the 7-day special camps gave me the opportunity to overcome stage fright. Now, I am confident enough that no stage can make me nervous."

Simran Kharor from the Department of Economics said, "I used to think I wouldn't be able to manage time for NSS activities apart from my studies, but slowly I've learned to manage my time and have become a multitasking, punctual, responsible, and proud NSS volunteer."

Japanese Language Teacher Among Students

A Story of Dedication by an IMCMT Student

SRISHTI
KU CAMPUS

Amidst a practical exam at Kurukshetra University, a student from the Institute of Mass Communication and Media Technology (IMCMT) amazed everyone when she presented a handwritten newspaper—completely in Japanese. Kamlesh, the student behind this creative feat, left the faculty members in awe when she revealed that she is, in fact, a Japanese language teacher herself—a revelation that added a whole new layer of admiration to her already impressive display.

Kamlesh shared the inspiration behind her journey: "My love for Doraemon sparked my curiosity about the language," she said. Her interest grew sharper while in Class 9th, her cousin began learning Japanese and began sharing new words and phrases. By Class 11th, Kamlesh got herself enrolled in formal Japanese classes.

"It was easy at first, but when I began learning Kanji, the most difficult script, it turned out to be a daunting task," she recalled. With the

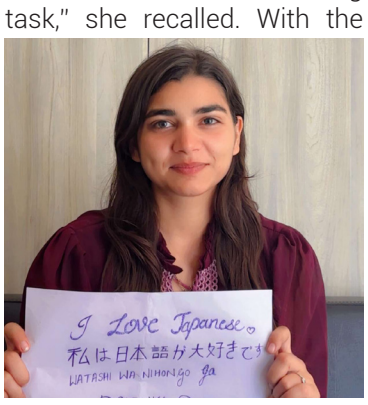

support of her mother and brother, she overcame the struggles and began to enjoy the learning process.

By her second year at university, Kamlesh started teaching Japanese online through digital platform. She has successfully guided two students to pass the N5 level of the Japanese Language Proficiency Test and teaching basics to several other students.

Her fascination with Japan's culture, traditions, and anime keeps her connected to the language. Kamlesh combined her passion for mass communication with Japanese to create a handwritten Japanese newspaper, which impressed even the seasoned faculty. When asked where one can learn Japanese, she recommends that department of Foreign Language at Kurukshetra University as good option. She believes there are immense opportunities for those proficient in the language.

KU Newsletter Explors how Bangladeshi students are shaping their journey at KU

From Borders to Bonds: Bangladeshi Students Embrace KU as Home

Nayem
KU Campus

Kurukshetra University, located in the historic city of Kurukshetra, has long attracted international students by offering academic excellence, modern infrastructure and a vibrant campus life. With students from 25 countries, the university's global reputation continues to grow. Among the newest additions in the last two years are 76 students from Bangladesh, enrolled in various departments. A student reporter from the KU Newsletter reached out to these students to understand their experiences and share them with the wider campus community. "As the train pulled into Kurukshetra station, the air smelled different — a mix of dust, marigold flowers and distant temple bells," recalled a group of Bangladeshi students, their hearts full of nervous hope. "During our orientation program, I was hesitant to connect with others," says Ribin Khisa, a BBA student. "But when the Dean shook my hand and said, 'Welcome to the family,' I immediately felt I belonged. I never imagined such warmth from both teachers and classmates." For Juyena Rahman from the Department of Economics, it was more than a geographical shift — it was an emotional one. "Leaving family during festivals was heartbreaking. But my

classmates invited me to Diwali. We lit candles together. I forgot I was away from home." Touched by Indian traditions and hospitality, she said, "Vasudhaiva Kutumbakam — the world is one family — isn't just a slogan. It's lived here." Sharing her experience, Tingki Tripura, also from the Department of Economics, says, "Before arriving, we had heard that this place is known as the land of the Gita and Mahabharata. But that understanding wasn't heartfelt. Now, when we walk around Brahma Sarovar and Jyotisar, we truly feel this is where the timeless wisdom of the Srimad Bhagavad Gita came from."Juyena now dreams of addressing poverty in Bangladesh, inspired by her experiences at KU. "Our Tourism professors don't just teach — they make us live the lessons," said Dipashree Saha. The students are seen laughing in the canteen, studying in groups, clicking selfies. They didn't just cross borders — they found a KU as second home.

इतिहास का पन्नाः ठीक यहां जन्मा था केयू

मानसी, आस्था
बीए जे एम सी –प्रथम वर्ष,
आईएमसीएंडएमटी, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय

हर महान इमारत की शुरुआत एक ईंट से होती है, और कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय की वह पहली ईंट 11 जनवरी 1957 को डॉ. राजेन्द्र प्रसाद (भारत के पहले राष्ट्रपति) के हाथों रखी गई थी। यह केवल एक भवन नहीं, बल्कि उच्च शिक्षा और सांस्कृतिक विरासत की नींव थी। सन 1972–73 के बीच विश्वविद्यालय की आधारशिला स्थापित की गई, जो आज 'द ओपन लॉक' के नाम से प्रसिद्ध है। यह खूबसूरत स्मारक विश्वविद्यालय के कम्युनिटी सेंटर के पास स्थित है। जितना अद्भुत यह स्मारक है, उतना ही विलक्षण है इसके निर्माता का व्यक्तित्व प्रोफेसर रूप चंद। 1936 में जन्मे रूप चंद ने मुंबई से कला की शिक्षा प्राप्त की थी। वह न केवल एक कलाकार है, बल्कि पूर्ण रूप से हरियाणा में कला के आंदोलन का प्रतीक है।। सन 1960 में उन्होंने बाल भवन की स्थापना की, जो नार हरि विष्णु गाडगिल (तत्काल. ीन पंजाब के राज्यपाल) की अध्यक्षता में चंडीगढ़ में बना। जब 1 नवंबर 1966 को

रूप चंद

हरियाणा एक नया राज्य बना, तब रूप चंद ने अपनी कला को एक नई दिशा दी । इसके बाद प्रो. रूप चंद ने अंबाला, कुरुक्षेत्र, रोहतक और हरियाणा के अनेक शहरों में घूमकर युवा कलाकारों को प्रेरित किया और उन्हें रचनात्मक राह दिखाई। 'ओपन लॉक' न केवल एक कलाकृति है, बल्कि आधुनिक भारत के निर्माण की उस सोच की निशानी है, जो शिक्षा, संस्कृति और कल्पना की शक्ति से जन्मी थी।

सूचना का हेरफेर और इससे बचाव

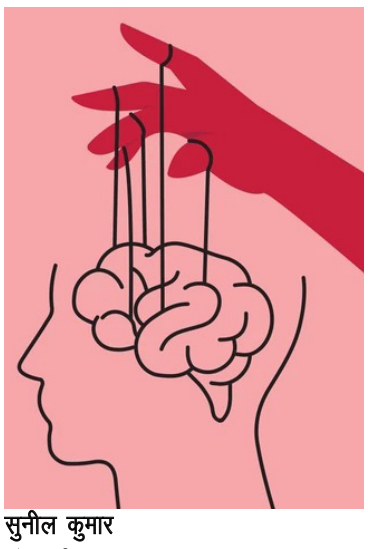

सुनील कुमार
शोधार्थी, पुस्तकालय एवं सूचना विभाग

क्या हो जब आपकी असल सूचना को नकली सूचना से बदल दिया जाए। क्या हो जब आपके द्वारा तैयार डाक्यूमेंट्स को गलत डाक्यूमेंट्स से बदल दिया जाए। जी हाँ आज कल ऐसा ही हो रहा पर जरूरी नहीं कि आर्टिफीसियल इंटेलिजेंस आने से ही ये अस्तित्व में आया है। बल्कि फिजिकल सूचना के जमाने से इसमें बदलाव किये जाते रहे हैं और अभी भी किये जा रहे हैं जिसका पता लगाना बहुत ही मुश्किल काम है। पर अगर आप इनफार्मेशन को सही ढंग से व्यवस्थित करने और स्टोर करने के शौकीन हैं तो आपके लिए इनफार्मेशन में हुए बदलाव का पता लगाना और अपने आप को सही साबित करना और भी आसान हो जाता है। भारत में जब आक्रमणकारी आये तो उन्होंने सबसे पहले इसी नीति को अपनाया असली सूचना को अपने द्वारा बनाई गयी सूचना से बदल दिया और जहाँ पर असली इनफार्मेशन मौजूद थी उसे नष्ट करने का प्रयत्न किया गया। कई बार मिसइंटरप्रेटशन से भी इनफार्मेशन में काफी बदलाव आ जाता है। आज भी जब हम इनफार्मेशन टेक्नोलॉजी के युग में विचरण कर रहें हैं तो ये चीजे विद्यमान हैं क्योंकि असल सूचना को स्टोर करने और उससे सही समय पर यूज़ में लाने की प्रैक्टिसेज में कमी आयी है। रिसर्च पब्लिकेशन और कंप्यूटर इनफार्मेशन स्टोरेज सिस्टम में में भी टेक्निकल टर्मिनोलॉजी को इग्नोर किया जा रहा है जिससे इनफार्मेशन में असल अर्थ ही बदल जाता है कई लेख जो ट्रांसलेशन स्टडीज पर आ रहे हैं जब वो कई ट्रांसलेशन को ओरिजिनल से मिलान करते हैं तो निकल के आता है की असल इनफार्मेशन में कुछ और कहा गया है और लिखा कुछ और जा रहा है। इसका प्रचलन इसलिए भी कम हुआ है कि ये एक टाइम खर्च करने का प्रोसेस है। इसको हल करने के लिए AI सिस्टम बनाया जा सकता है जो लिखते लिखते ही वर्ड्स के synonymus एंड homonymus के बारे पता लग सके। दूसरी जो कमी आयी है वो सिस्टेमेटिक प्रिजर्वेशन ऑफ़ ओल्ड इनफार्मेशन की है। जिससे की नई और फेक इनफार्मेशन को साबित करना और भी आसान हो जाता है। जरूरत है ऐसे सॉफ्टवेयर बनाये जाएँ जिससे सिस्टेमेटिक प्रिजर्वेशन पूरी सिक्योरिटी से इनफार्मेशन प्रिजर्वेशन करें और फेक इनफार्मेशन को पहचान कर उस पर स्पैम मार्क लगाए। जरूरत ऑथेंटिसिटी इनफार्मेशन सेंटर्स स्थापित करने की है जो पुस्तकालयों या और सूचना उपकरणों से भी जोड़े जा सकते हैं जहाँ पर लोग व्यक्तिगत यां ऑनलाइन सूचना के बारे में अपने शक क्लियर कर सके। अगर महत्वपूर्ण कमी की और बात करें तो डॉक्यूमेंटेशन वर्क और सेवाओं की बात किये बिना नहीं रहा जा सकता डॉक्यूमेंटेशन वर्क या डॉक्यूमेंटेशन सर्विस सबसे सटीक जरिया है जिसके द्वारा सही डॉक्यूमेंट तक पहुंचना संभव किया जा सकता है। पुस्तकालयों से मिलकर एक ऐसा सेल स्थापित किया जाना चाहिए जो स्कॉलरली इंस्ट्रूमेंट्स (जैसे कि पब्लिकेशन प्लेटफॉर्म्स, रेपुटेड पब्लिशर्स, रेपुटेड आर्काइव प्लेटफार्म की सलाना लिस्ट जारी कर सके) की जानकारी दे सकें चूँकि इससे आपकी इनफार्मेशन व्यर्थ होने से तो बचेगी ही साथ में आपके नाम से जो चेंज करके पब्लिश किये रिसर्च जिसके बहुत ही दुष्परिणाम हो सकते हैं, बचा जा सकता है।

काव्य कोना

Vaishnavi, M.Sc Mass Com

DON'T GROW UP!!

The things will never seem this beautiful again.
You'll think the last time you saw humanity & the hospital you go for checkups will frown at you until you feel sick. See..that bruises on your knees, now Are a mark of jollity but later your bruised heart will carry pain, that won't offer the same love again. Don't grow up the monsters stop living in story books & instead take the form of your college friends. As You can't close the covers of your coffin the same way you can't leave the people who hurt you. & You'll eventually learn, Snakes people do shed their skin. Don't grow up, bcoz you'll realise your favourite cartoon characters are not only the ones who play hide & seek! & You can't change your best friend thinking that cocaine puts a better smile on his face than you can! Sharing candies won't be the apology again, even three long paragraphs of feelings will be considered a waste

Tanishka Sharma, BAJMC

THE SECTION UNTALKED

If I were a man,
I'd reign the world at night
Chase my shadow down the street Smoke a cigarette under the light.
But is it what men are all about?
Love for kids and ladies is unconditional
But love for men after he proves himself Still brings in mind a huge doubt.
Being a man isn't as easy as you think.
There is a pressure of family for life.
The pressure to work hard enough
To be able to feed their children and wife.
For not going to bed early
He might be judged or get some hate, But I think it's his dream That motivates him to stay up late.
Men don't cry is a myth in dairies.
Why's he accused for all the misery in society?
His feelings are abandoned beneath his heart. Then who are we to question his anxiety?

खुशी, बी.ए. जे. एम. सी.

बचपन की यात्रा

कागज की कश्ती थी पानी का किनारा
था मस्ती से प्यार था और ये दिल आवारा था

हर तरफ हमारी शरारतों का जिक्र था
वो बचपन भी कितना बेफ्रिक था

खिलौने देख कर मन खिल जाता था
मां की गोद में सारा सुकून मिल जाता था

मित्रों के संग भगदड़, खिलौनों की लड़ाई, कागज के जहाज पर, सपनों की उड़ान सजाई।

खेल–खिलोनों का जहां, मस्ती की हर वो रात, बचपन की सुंदर यादें, याद आती है हर बात ।

छोटी–छोटी कश्तियाँ बनाकर, नाव में सवार होते थे, कश्ती डूब जाने पर थोड़ा थोड़ा रोते थे द्य

हर चीज में खुशी ढूंढते थे
आंखो में सच्चे सपने बुनते थे

छुट्टी के दिन लोरियों का, सपनों में खो जाते थे, माँ की दुलारी आँचल में, अपनी खुशियों को ढो जाते थे।

अब कहा आगए इस समझदारी के दल दल में याद आते है बचपन के वो दिन पल पल में याद आते है बचपन के वो दिन पल पल में

भूमि गुप्ता, बी.एस.सी. मल्टीमीडिया

हे भारत के वीर सपूतों

हे भारत के वीर सपूतों
मानवता का गला घोंट कर,
कायरों ने किया हैं वार
निकलो अपनी तलवार
दिए मौके मित्रता के
पर मारा खंजर बारम्बार
लहूलुहान हैं ये धरती,
कर रही तुमसे बस यही पुकार
गुंज उठा ये अम्बर सारा
हे भारत के वीर सपूतों।।

हे भारत के वीर सपूतों।
गुंज उठे पूरा संसार।
अब विनती न हो,
गिनती न हो,
ऐसा करो तुम नरसंहार।
गीदड़ों की झुंड में जाकर
भरों शेरों की तुम हुंकार।
हे भारत के वीर सपूतों।।

हे भारत के वीर सपूतों।
उन बेगुनाहों को मारी गोली,
वहीं छोड़ चले सबका साथ
हे भारत के वीर सपूतों,
निकालो अपनी तलवार।।

हे भारत के वीर सपूतों
जरा देखो तो उनको
सरहद और अब घर के अंदर
वो आकर करते वार
जरा, देखो तो उनको!
हे भारत के वीर सपूतो
भूमि गुप्ता, तुम्हें करे पुकार!
आओ मिलकर करें वार!

साक्षी, एम.ए. जनसंचार

सहेली की पहेली

कई बार मन में ख्याल आता है, क्यूं ना लिखूं, मैं एक कविता
क्या लिखूं मैं अपनी जुबानी, फिर सोचा की लिखूं, कहानी
उन सारे दोस्त की, बूँद हो जैसे ओस की
हम हैं सारी 11 सहेली, अनसुलझी सी जिनकी पहेली
पहला नंबर 'भारती' का आता, जि. सको कोई समझ ना पाया
इसको हमेशा पढ़ते पाया, दूजा नंबर 'सोनिया' का आया
हर टीचर का करती काम, एक मिनट ना इसको आराम
सीखा 'शिखा' से हंसते रहना, हॅसी है हम सबका गहना
'प्रीति' की है बात निराली, सीध ी–साधी भोली भाली
बारी अब 'कोमल' की आती, चेहरा देख दिल जान जाती
कभी ना जिसने डरना सीखा नाम है उसका, 'मोनिका'
माफ करना मुझ 'अदिती' पर त बैठी भी लम्बी लगती है
सबको इसे हंसाते पाया, 'वर्षा की ये प्यारी माया
नोटबुक में शब्दों को ना मिस होने देना, 'प्रिया' का बस यही है कहना
हमेशा अच्छे सुझाव बताये, 'रिया' का ये अंदाज लुभाएं अपनी क्या बताऊं
कि खुद को समझ ना पाई मैं ये थी हम सब दोस्तों की कविता, जो हमारी कहानी है...
अस्त–व्यस्त जिंदगी में, बस यादें ही रह जानी है।

Stitching the Future: Modern Dress Designing Techniques Unveiled at IIHS

Excellence in Action: KU students excel at 5-Day Red Cross Camp

Honored top LLB (2022–2025) students during The Law Fest, with Registrar Dr. Virender Pal presenting the awards.

True progress begins with women's empowerment- Dr. Mamta Sachdeva at BVP Kurukshetra service event.

Preserving Pride: KU's Heritage Museum Earns Praise from Education Minister

Three books unveiled at Kurukshetra University's Punjabi poetry event under VC Prof. Somnath Sachdeva's guidance.

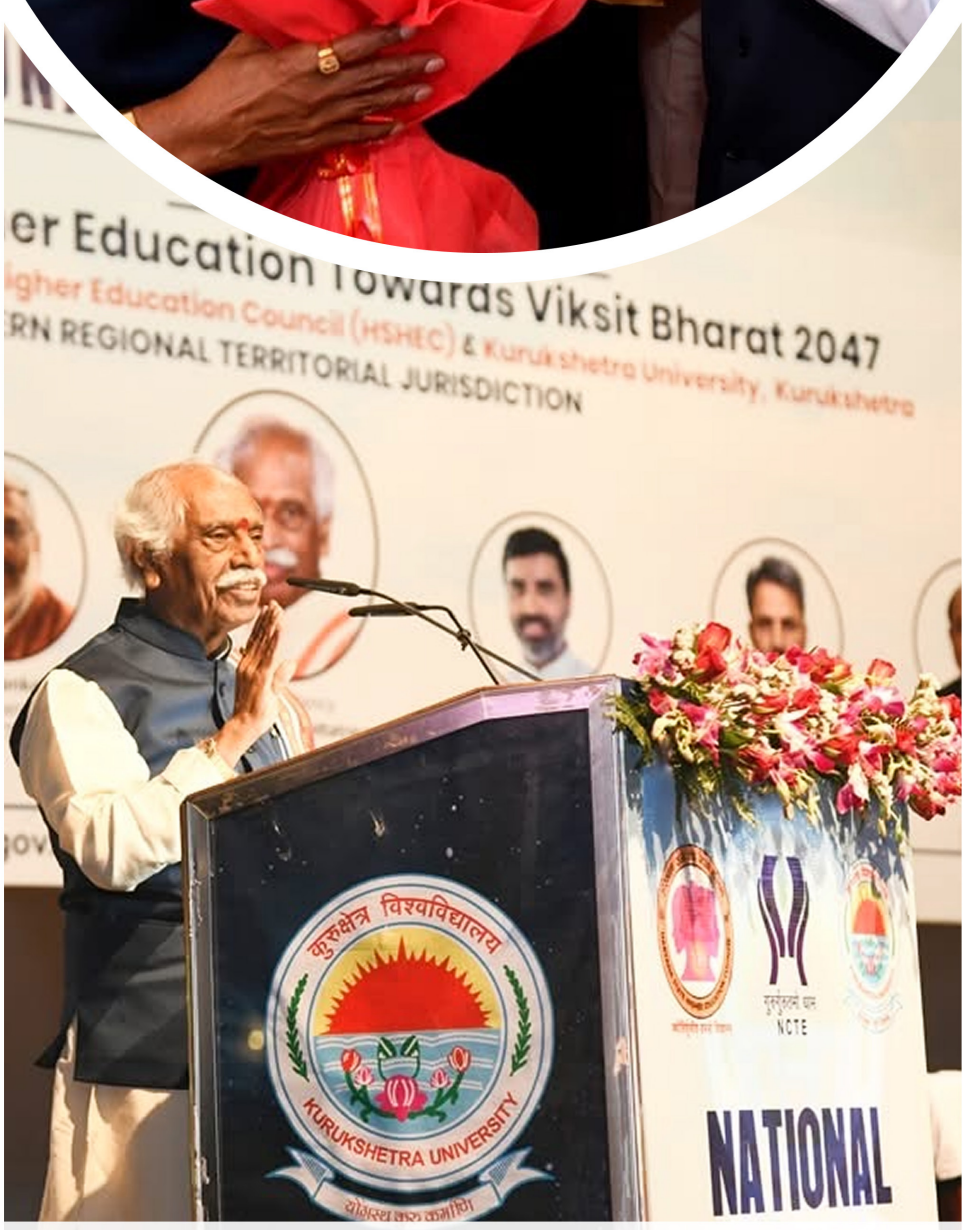

A Confluence of Vision: Governor Bandaru Dattatreya Joins Visionaries at the National Conclave 2025

True progress begins with women's empowerment- Dr. Mamta Sachdeva at BVP Kurukshetra service event.

From Debate to Derby: Naveen Jindal Invites Youth Parliament Delegates to National Polo Championship Finale

Symbol of Stories: IMC&MT launches its new logo

Under VC Prof. Somnath Sachdeva's guidance, KUK NCC cadets depart for 10-day Combined Annual Training Camp.

कैंपस डायरी अप्रैल: 2025

» कुवि परिसर में 20 से अधिक संदिग्ध वाहनों को सुरक्षा कर्मियों ने पकड़ा।
» जून के अंतिम सप्ताह में आईआईएचएस में होंगे दाखिले शुरू।
» धरोहर को देखकर अभिभूत हुए हरियाणा के शिक्षा मंत्री श्री महिपाल ढांडा।
» कुवि में पीजी दाखिले के लिए मई के दूसरे सप्ताह से निकलेंगे फार्म।
» केयू इतिहास में पहली बार 52 शिक्षकों को मिली एक साथ पदोन्नति।
» कुवि में पांच शिक्षक बने सीनियर प्रोफेसर।
» कुवि के आतिथ्य भाव से भाव से गद्गद् हुए 9 राज्यों के शिक्षक।
» विश्वविद्यालय के खेल ग्राउंड में नेशनल स्तर का एस्ट्रो–टर्फ़ हॉकी ग्राउंड बनकर तैयार हुआ।
» विश्वविद्यालय में रोस्ट्रम प्रतियोगिता–2025 का समापन।
» विश्वविद्यालय के सभी विभागों एवं संस्थानों में सेमेस्टर–2 व सेमेस्टर–4 की परीक्षाओं के लिए डेट–सीट जारी।
» ऑनलाइन एवं दूरस्थ शिक्षा केंद्र में विभिन्न दूरस्थ पाठ्यक्रमों हेतु पर्सनल कंडक्ट प्रोग्राम (पीसीपी) का समापन हुआ।
» ऑनलाइन एवं दूरस्थ शिक्षा केंद्र के पाठ्यक्रमों हेतु ऑनलाइन कक्षाओं का आरंभ।
» विश्वविद्यालय के प्रशासनिक भवन–3 का निर्माण कार्य जारी।
» विश्वविद्यालय के ललित कला विभाग में तीन दिवसीय प्रदर्शनी का समापन।
» विधि विभाग में तीन दिवसीय 'लॉ फेस्ट स्पंदन 2025' का सफल समापन।
» जनसंचार एवं मीडिया प्रौद्योगिकी संस्थान और निदेशक युवा सांस्कृतिक विभाग द्वारा स्टेट लेवल डॉक्यूमेंट्री प्रतियोगिता के लिए मांगी एंट्री
» कुवि के प्राणीशास्त्र विभाग के एसोसियेट प्रोफेसर डॉ दीपक राए बब्बर को अगामी दो वर्ष के लिए अकादमी परिषद का सदस्य बनाया गया
» कुवि की परीक्षा शाखा ने 12 परीक्षाओं के परिणाम घोषित किए हैं।
» कुवि ने शुरू किया अपना इंस्टाग्राम चौनल

केयू को मिला हरियाणा के सर्वश्रेष्ठ सरकारी बहु विषयक विश्वविद्यालयों की श्रेणी में प्रथम स्थान

कुवि परिसर : कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय ने शिक्षा, शोध, अनुसंधान सहित खेल एवं संस्कृति के क्षेत्र में नए आयाम स्थापित किए है। यह विचार विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सोमनाथ सचदेवा ने एजुकेशन वर्ल्ड इंडिया हायर एजुकेशन रैंकिंग 2025–26 के तहत केयू को भारत के सर्वश्रेष्ठ सरकारी बहु विषयक विश्वविद्यालयों की श्रेणी में हरियाणा में प्रथम स्थान दिए जाने पर प्रसन्नता प्रकट करते हुए व्यक्त किए। कुलपति ने सभी केयू शिक्षक संकाय सदस्यों, शोधार्थियों, विद्यार्थियों एवं कर्मचारियों को इस अवार्ड की बधाई देते हुए कहा कि देशभर में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में सरकारी बहु विषयक विश्वविद्यालयों की श्रेणी में हरियाणा में प्रथम स्थान प्राप्त करना बडे गर्व एवं गौरव का विषय है।

प्रो. सचदेवा ने बताया कि एजुकेशन वर्ल्ड इंडिया हायर एजुकेशन द्वारा विश्वविद्यालयों की संकाय की क्षमता, वेलफेयर और विकास, अनुसंधान और नवाचार, पाठ्यक्रम और शिक्षण, उद्योग इंटरफेस, प्लेसमेंट, बुनियादी ढांचे और सुविधाओं,अंतर्राष्ट्रीयता, लीडरशिप, गवर्नेंस गुणवत्ता आदि मानकों का मूल्यांकन एवं सर्वेक्षण करने के बाद केयू को 921 अंकों के साथ सरकारी बहु–विषयक विश्वविद्यालयों की श्रेणी में हरियाणा में प्रथम स्थान मिला। उन्होंने बताया कि केयू को सर्वाधिक अंक संकाय क्षमता व ढांचागत विकास तथा उपलब्ध सुविधाओं के लिए मिले। इस अवसर पर कुवि कुलसचिव डॉ. वीरेन्द्र पाल ने इस बहु विषयक विश्वविद्यालयों की श्रेणी में प्रथम रैंक आने पर प्रसन्नता प्रकट की।

दूरस्थ एवं ऑनलाइन –शिक्षा केन्द्र को सक्सेस रिव्यू का टॉप यूनिवर्सिटी अवार्ड

कुवि परिसर : कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के दूरस्थ एवं आनलाइन –शिक्षा केन्द्र को कम्पटीशन सक्सेस रिव्यू (सी.एस.आर) द्वारा 'सी.एस.आर. टॉप यूनिवर्सिटी ऑफ इंडिया' और सी.एस.आर कॅरियर विकास में उत्कृष्टता के लिए 'अग्रणी संस्थान अवार्ड' से सम्मानित किया गया।

ये अवार्ड केन्द्र की निदेशिका प्रो. मंजूला चौधरी ने 20 अप्रैल, 2025 को सी.एस.आर अवार्ड्स नाईट, नई दिल्ली में प्राप्त किया। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सोमनाथ सचदेवा ने इस उपलब्धि के लिए केन्द्र की निदेशिका प्रो. मंजूला चौधरी को बधाई दी।

केन्द्र के सभी ऑनलाइन व ऑफलाइन कोर्स उच्च स्तर के हैं। इसके प्रति विद्यार्थियों में जबरदस्त आकर्षण है। केन्द्र से उत्तीर्ण छात्र देश के विभिन्न क्षेत्रों में अपनी सेवाएं दे रहे हैं। दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केन्द्र ग्रामीण छात्रों को सुविधाजनक शिक्षा प्रदान कर रहा है। विभिन्न देशों के छात्र ऑनलाइन माध्यम से एक ही मंच पर शिक्षा ग्रहण करते हैं।

केंद्र की निदेशिका प्रो. मंजूला चौधरी ने कहा कि केंद्र इंटरेक्टिव ऑनलाइन माध्यम द्वारा हजारों छात्रों को उच्च शिक्षा प्रदान कर रहा है। यह केन्द्र भारत के दूरस्थ उच्च शिक्षा के क्षेत्र में मुख्य भूमिका अदा कर रहा है। उन्होंने कहा कि कुवि के दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केन्द्र को सीएसआर ने शिक्षा में अग्रणी संस्थान के लिए यह अवार्ड दिया है।

प्रो. मंजूला चौधरी ने बताया कि केंद्र को छः बार 'सीएसआर टॉप यूनिवर्सिटी ऑफ इंडिया' अवार्ड से नवाजा चुका है।

सीमाओं से परे कला: फाइन आर्ट्स की दिव्यांग छात्रा का कमाल

हाथ नहीं, हौसलों ने भरे रंग

ज्योति स्वर्णाक्षी, स्नेहा
बीएएमसी, आईएमसीएमटी।

'लोग जिस हाल में मरने की दुआ करते हैं मैंने उसमें जीने की कसम खाई है'। हौंसलों की मिसाल कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के फाइन आर्टस विभाग की छात्रा भारती ने इन पंक्तियों को हु–ब–हू जीवन में उतारकर सबको हैरान कर दिया। बचपन में ही एक हादसे में हाथ गंवाने के बावजूद पेंटिंग में अपनी प्रतिभा साबित की।

उत्तराखंड के नैनीताल जिले के रामनगर क्षेत्र के एक छोटे से गाँव से निकलकर, एक साधारण–सी दिखने वाली असाधारण लड़की ने समाज की सोच को एक नई दिशा दी है। जब वह केवल 11 वर्ष की थीं, तब खेत में जानवरों को भगाने के लिए लगाए गए देसी बम के विस्फोट में उन्होंने अपने दोनों हाथ खो दिए। यह एक ऐसा हादसा था जो किसी की भी दुनिया उजाड़ सकता था। मगर भारती ने इस त्रासदी को अपनी कमजोरी नहीं बनने दिया, बल्कि उन्होंने इस कमजोरी को ताकत में परिवर्तित कर दिया। वह कहती हैं, "मुझे कभी महसूस ही नहीं हुआ कि मैं अलग हूं।" इस विश्वास के साथ उन्होंने स्कूल जाना शुरू किया, और धीरे–धीरे खुद को लिखने, पढ़ने और पेंटिंग करने

चित्रकार, भारती

में निपुण बना लिया। बारहवीं के बाद उन्होंने चित्रकला को गंभीरता से अपनाया और आज वे अपने पैरों और मुँह की मदद से ऐसी चित्रकारी करती हैं जिसे देखकर लोग अचंभित रह जाते हैं। उनके चित्रों में भावनाओं की गहराई और समाज के अनकहे पहलुओं की सशक्त अभिव्यक्ति होती है। कई बार उनके चित्रों में महिलाओं के हाथ नहीं दिखाई देते, यह उनकी कल्पना हो सकती है, पर इसमें कहीं न कहीं उनकी अपनी कहानी की झलक भी मिलती है। भारती कहती हैं कि वह कल्पना से चित्र बनाती है लेकिन उनकी कला उनके भीतर के दृष्टिकोण और जज्बे को स्वतः प्रकट कर देती है। भारती इस समय विश्वविद्यालय के ललित कला विभाग में स्नातकोत्तर की छात्रा हैं।

विश्वविद्यालय में अध्ययन के दौरान उन्होंने मौसम, वातावरण और संसाधनों से जुड़ी कई चुनौतियों का सामना किया, लेकिन हार कभी नहीं मानी। भारती कहती हैं कि यहां थ्योरी और प्रैक्टिकल का संतुलन उन्हें बहुत पसंद आया।

उनकी कला को देखकर अक्सर लोग हैरान रह जाते हैं। वे मुस्कुराते हुए कहती हैं, "कई लोग तो यकीन ही नहीं करते कि ये पेंटिंग मैंने बनाई है।"

हालांकि वह सोशल मीडिया पर अधिक सक्रिय नहीं हैं, लेकिन उनकी पेंटिंग्स चंडीगढ़, अमृतसर, दिल्ली जैसी जगहों पर प्रदर्शित हो चुकी हैं और वहाँ से उनकी कलाकृतियां खरीदी भी गई हैं। भविष्य को लेकर भारती की सोच बहुत स्पष्ट है कि वह गाँवों के विशेष बच्चों को, खासकर मूक–बधिर बच्चों को चित्रकला सिखाना चाहती हैं। उनका मानना है कि हर किसी की जिंदगी में परेशानी होती है, लेकिन उनसे भागना नहीं चाहिए, लड़ना चाहिए।

ललित कला विभाग की प्रोफेसर डॉ. चंद्रिमा दास कहती हैं, 'भारती का जीवन कठिनाइयों से भरा है, लेकिन वह हर कक्षा में अपना कार्य पूर्ण समर्पण से करती हैं। कई बार उन्हें व्यक्तिगत और शारीरिक परेशानियाँ आईं,पर भारती ने कभी हार नहीं मानी'।

पेज डिजाइनिंग में जनसंचार के विद्यार्थियों की रचनात्मकता

कुवि परिसर : कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सोमनाथ सचदेवा के कुशल मार्गदर्शन और जनसंचार एवं मीडिया प्रौद्यो. गिकी संस्थान के निदेशक प्रो. महासिंह पूनिया की अगुवाई में एम.ए. अंतिम वर्ष के विद्यार्थियों ने प्रिंट प्रोडक्शन पाठ्यक्रम के तहत विभिन्न समाचार–पत्रों का प्रकाशन किया। इन विद्यार्थियों ने अपने संबंधित समाचार–पत्रों में स्वयं ही रिपोर्टिंग, फोटोग्राफी, एडिटिंग और डिजाइनिंग की हैं। संस्थान के निदेशक प्रो. पुनिया ने बताया कि संस्थान थ्योरी के साथ प्रैक्टिकल पर भी विशेष ध्यान देता है ताकि समाचार–पत्र उद्योग की रोजग. ार संबंधी जरूरतों को पूर्ण किया जा सके। प्रोफेसर पूनिया ने कहा कि संस्थान में संचालित अन्य कोर्स जिनमें बीएएसी मल्टीमीडिया, बीएससी ग्राफिक्स एनिमेशन, बीएससी प्रिंटिग एंड पैकेजिंग में भी विशेष ध्यान दिया जाता है। इस अवसर पर पाठ्यक्रम के शिक्षक डॉ. अभिनव ने बताया कि विद्यार्थी कीर्ति ने 'कीर्ति क्रोनिकल', साक्षी ने 'साक्षी न्यूज', अमन मलिक व हितेश राय ने 'हरियाणा एक्सप्रेस', प्रीति यादव, रिंकू जागलान और साहिल ने 'नवदृष्टि', अनिल कुमार, खुशी और गुरूमुख ने 'कैंपस परिक्रमा', कमलेश शर्मा व नम्हा यादव ने 'कुरुक्षेत्र एक्सप्रेस' और जश्लीन, सृष्टि, संतोष व भावना ने 'सृष्टि टाइम्स', निशा, भावना ने 'भारत दीप' और संध्या व मुस्कान ने 'जनवाणी' समाचार–पत्र प्रकाशित किए हैं।

Editor. Dr. (Prof.) Maha Singh Poonia, Director, INSTITUTE OF MASS COMMUNICATION AND MEDIA TECHNOLOGY, KURKSHETRA UNIVERSITY, KURKSHETRA, Editorial Committee: Dr. Abhinav Kataria, Asst. Prof., Dr. Tapesh Kiran, Asst. Prof., Dr. Pardeep Rai, Asst. Prof., Mr. Rahul Arora, Asst. Prof., Graphic Designing Team Head: Mr. Nitin Chawla, Asst. Prof. IMC&MT, Scholars & Students: Sachin, Sandeep, Parshant, Vasu Vaidansh, Riya.
Published By The Registrar, Kurkshetra University, Kurkshetra. E-mail id- newsletter@kuk.ac.in